ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

भारतीय भूमिगत वाव–एक अद्‌भुत स्थापत्य

Indian Underground Vav - A Wonderful Architecture

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

वर्षा बंसल
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय भूमिगत वावों के विषय में बताने से पूर्व मैं भूमिगत वावों को बनाने के पीछे के उद्‌देश्य को उजागर करना चाहूंगी कि क्यों वावों को निर्मित करने की जरूरत ज्ञात हुई? सामान्य तथा सामान्य से अधिक वर्षा वाले भौगोलिक क्षेत्रों में तालाब आसानी से बनाए जा सकते हैं, लेकिन जहां वर्षा कम होती है और जल का संरक्षण भी जरूरी हो, वहां जल संचयन करना बहुत कठिन होता है। किसानों को ऐसा एहसास हुआ कि फसल सिंचाई तथा मानसून अपवाह रोकने हेतु बड़े आकार के जलागमों का निर्माण करना जरूरी है तथा इसलिए आवश्यकता एवं सरलता के माध्यम को ध्यान में रखते हुए उन्होंने वर्षा के जल को अधिकृत करने हेतु रूप का विकास किया और वो था कुएँ व तालाब।

‘When the well’s dry, we know the worth of water’

- Benjamin Franklin

प्राचीन काल से ही मूल रूप से कुएँ *गहरे गड्‌ढे, चट्‌टान से उत्कीर्ण कुएँ* या फिर *पानी के तालाब* होते हैं जिनमें पानी तक जाने के लिए सीढ़ीयां बनी होती हैं जिनको क्षेत्रीय विभिन्नता तथा मातृभाषा के आधार पर भिन्न–भिन्न नामों जैसे संस्कृत शिल्प शास्त्रों व प्राचीन लेखों में कुएँ को *वापी* या *वापिका, कर्कन्धु, शकन्धु* ; गुजरात में *वाव, वाई* ; कर्नाटक निवासी कन्नड़वासी *कल्याणी, पुष्करमी* ; महाराष्ट्र निवासी *बारव* आदि नामों से संबोधित किया जाता है। वाव पश्चिमी भारत में स्थापत्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना हैं। 7वीं शताब्दी से प्रचलित भूमिगत वाव वास्तुकला का अनूठा रूप हैं जो कि मुख्य रूप से राजस्थान तथा गुजरात क्षेत्रों में पाये जाते हैं, जहां पर ‘जल बिन सब सून’ वाली स्थिति है।

भारत में गुजरात राज्य के अतिरिक्त बावड़ियाँ लखनऊ, राजस्थान, दक्षिण भारत, नई दिल्ली, कर्नाटक आदि क्षेत्रों में भी पाई जाती हैं। राजस्थान निर्मित बावड़ियाँ गुजरात क्षेत्र में पाये जाने वाले वावों की तुलना में अलग संरचना की हैं। साथ ही कर्नाटक में भी हमें सीढ़ीदार कुएँ पाये जाते हैं जिनकी संरचना कुंड के समान है।

निष्कर्षतः कहे सकते हैं कि बावड़ियां प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का प्रमुख स्त्रोत रही हैं जिनमें उपलब्धता एवं प्राप्ति की दृष्टि से काफी विषमतायें मिलती हैं। ये वास्तुकृतियां किसी व्यक्तिगत अहं, प्रदर्शन या समृद्धि हेतु नहीं बनती थीं बल्कि जल से संबंधित ये इमारतें सार्वजनिक उपयोग हेतु बनाई जाती थीं जो ‘सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय’ के उद्‌देश्य को पूर्ण करने में सक्षम रहीं।

Before I talk about Indian underground wavons, I would like to highlight the purpose behind making underground wavas, why the need to manufacture wavas was known? Ponds can be easily constructed in geographical areas with normal and above normal rainfall, but where rain is less and water conservation is also necessary, water harvesting is very difficult. The farmers realized that it was necessary to build large-sized water reservoirs to prevent crop irrigation and monsoon runoff, and therefore keeping in view the need and the medium of simplicity, they developed the form to authorize rainwater and that was And the pond.

Since ancient times, wells are basically deep pits, rock-engraved wells or water ponds in which ladders are made to reach the water, which have different names like Sanskrit crafts and ancient names based on regional variation and mother tongue. The wells in the articles are vapi or vapika, karkandhu, shakandhu; Vav in Gujarat, Y; Kannada resident Kalyani, Pushkarami, Karnataka; The resident of Maharashtra is addressed by the names of Barv etc. Vavas are an important part of architecture in Western India. They are an excellent piece of architecture. The underground vavas from the 7th century are a unique form of architecture found mainly in the Rajasthan and Gujarat regions, where 'Jal Bin Sub Soon' is in position.

Apart from the state of Gujarat in India, steps are also found in Lucknow, Rajasthan, South India, New Delhi, Karnataka etc. Rajasthan-made stepwells are of a different structure than those found in the Gujarat region. Also in Karnataka we also find terraced wells whose structure is similar to the pool.

In conclusion, it can be said that the stepwells have been a major source of the ancient water conservation system, in which there are many differences in terms of availability and availability. These artefacts were not made for any personal ego, performance or prosperity, but rather these buildings related to water were built for public use which were able to fulfill the purpose of 'Sarvajan Hitaya and Sarvajan Sukhaya'.

मुख्य शब्द : बावड़ी, मूर्तिशिल्प, वाव, भारत।
Bawdi, Sculpture, Vav, India.

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

प्रस्तावना

भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, दर्शन एवं तत्वज्ञान का दर्पण है जिसको कि हमारे मूर्तिकारों ने मूर्त रूप में परिलक्षित कर विभिन्न मंदिरों, मठों, भवनों, वावों आदि पर उकेरा है। मध्ययुग में जब विदेशी और मुस्लिम आक्रांताओं के आक्रमण प्रारम्भ हुये तब देश में ललित कलायें कुछ समय के लिए प्रभावित हुईं परन्तु भारत एक धर्म सहिष्णु देश रहा है जिसमें समन्वय की क्षमता इस सीमा तक देखी जा सकती है कि शक, हूण, यवन, कुषाण और मुगल आदि विदेशी ताकतें भी भारतीय संस्कृति की मूलधारा में समाहित होकर उसका अंग बन गये। देश में इस समय अनेक सुंदर इमारतों का निर्माण हुआ। साथ ही पश्चिमी भारत में सरोवर, कुएँ और बावड़ियाँ बनवाई गयीं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय वावों को बनाने के पीछे के उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला जायेगा।
2. इसके साथ ही वावों के ऐतिहासिक परिदृश्य से अवगत कराया जायेगा।

साहित्यावलोकन

इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि इसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि शोधकर्ता को अपने विषय से संबंधित प्रकाशित साहित्य का कितना ज्ञान है। मैंने अपने शोध पत्र को महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ साहित्यों का अध्ययन किया जैसे Morna, L - 2002, Steps to water- The Ancient Stepwells of India, Jain Neubauer, J - 1981, Stepwells of Gujarat in art- Historical Perspective, माधव, श्री विलास डी–2012, पाटन की प्रसिद्ध रानी की वाव (गुजराती) आदि नामक पुस्तकों से मैंने भारतीय वावों के विषय में जानकारी ज्ञात की।

प्राचीन काल से ही मूल रूप से कुएँ *गहरे गड्ढे, चट्टान से उत्कीर्ण कुएँ* या फिर *पानी के तालाब* होते हैं जिनमें पानी तक जाने के लिए सीढ़ीयां बनी होती हैं जिनको क्षेत्रीय विभिन्नता तथा मातृभाषा के आधार पर भिन्न–भिन्न नामों जैसे संस्कृत शिल्प शास्त्रों व प्राचीन लेखों में कुएँ को *वापी* या *वापिका, कर्कन्धु, शकन्धु* ; गुजरात में *वाव, वाई* ; कर्नाटक निवासी कन्नड़वासी *कल्याणी, पुष्करमी* ; महाराष्ट्र निवासी *बारव* आदि नामों से संबोधित किया जाता है।

वाव पश्चिमी भारत में स्थापत्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना हैं। 7वीं शताब्दी से प्रचलित भूमिगत वाव वास्तुकला का अनूठा रूप हैं जो कि मुख्य रूप से राजस्थान तथा गुजरात क्षेत्रों में पाये जाते हैं, जहां पर 'जल बिन सब सून' वाली स्थिति है। पत्थरों का बनाया गया यह अभूतपूर्व ढांचा सदियों से इन प्रांत की विरासत को संजोये हुए है।

Ac/Agni Purana- 'One who consecrates a reservoir of water in a single day a merit ten crore times more than one who perform thousands of Ashvamedha Yagna (the horse sacrifice). Such a Person ascends on to heaven in the vehicle and rejoices. He never goes to hell.'

जल प्रबन्धन की परम्परा प्राचीन काल से है। हड़प्पा नगर में खुदाई के दौरान जल संचयन प्रबन्धन व्यवस्था होने की जानकारी ज्ञात होती है। प्राचीन अभिलेखों से भी जल प्रबन्धन की प्रणाली की सूचना ज्ञात होती है। साथ ही पूर्व मध्यकाल, मध्यकाल एवं पौराणिक ग्रंथों तथा जैन बौद्ध साहित्य में भी नहरों, तालाबों, बांधों, कुओं, बावड़ियों, झीलों आदि का विवरण प्राप्त होता है। भारत में चट्टान से निर्मित सीढ़ीदार कुओं का समयकाल 200–400 ई.वी. का है। तत्पश्चात् वाव का निर्माण ढांक में 550–625 ई.वी. में हुआ। इसके उपरान्त प्रारम्भिक सीढ़ीदार वावों की रचना बड़े–बड़े पत्थर के टुकड़ों से हुई थी जिनका समयकाल 7वीं शताब्दी का था।

गुजरात में पाये सीढ़ीदार वाव का सबसे प्राचीन उदाहरण नवघन कुआ है, जिसका निर्माण जूनागढ़ स्थित उपरकोट की चट्टान से हुआ जो कि बौद्ध गुफाओं के दक्षिण में कुछ 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। कुछ अधिकारियों का मानना है कि नवघन कुए को कई सदियों बाद संभवतः रा नवघन द्वारा खोदा गया तथा इसका निर्माण कार्य इसके पुत्र राखेनगर द्वारा पुनः 11वीं शताब्दी में सम्पन्न किया गया।

चित्र सं.1– नवघन कुआ, उपरकोट फोर्ट, जूनागढ़

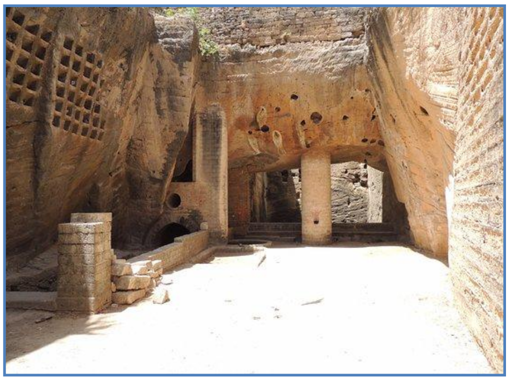

गुजरात के मैत्रका काल (470–788 ई.वी.) में ढांक स्थित दो सीढ़ीदार वाव झीलानी वाव व मंजुश्री वाव हैं। एक अन्य सीढ़ीदार वाव जिसका निर्माण कार्य भी उपरकोट की चट्टान से उत्कीर्ण प्राकृतिक पत्थर से हुआ। इसकी सरल संरचना में साधारण सीढ़ीदार गैलरी है जो अत्यंत संकीर्ण है जिसको गुजरात के चौलुक्य काल में निर्मित अदी कदी वाव के नाम से जाना जाता है,

जिसका नामकरण रा नवघन की दो दासियों (अदी और कदी) के नाम पर हुआ।

चित्र सं.2– अदी कदी वाव, उपरकोट फोर्ट, जूनागढ़

के शासनकाल से संबंधित है। जिसके दौरान सबसे शानदार सीढ़ीदार वाव रानी की वाव की रचना हुई। वाव में निर्मित मूर्तियों व खम्भों की समानता आदिनाथ मंदिर (जिसका निर्माण सर्वप्रथम भीमदेव प्रथम के मंत्री विमल शाह द्वारा माउंट आबू में 1032 ई.वी. में किया गया तथा बाद में चंद्रावती के शासक द्वारा किया गया) की मूर्तियों व खम्भों से की जाती है। भूगर्भीय बदलावों के कारण सरस्वती नदी में बाढ़ के आने से यह बहुमूल्य धरोहर काफी सालों तक मिट्टी की परतों में दबी रही जिसको भारतीय पुरातत्व विभाग ने सन् 1960 ई. में खुदाई में निकाला। दीवारों तथा खम्भों पर ज्यादातर नक्काशियाँ राम, वामन, महीसासुरमर्दिनी, कल्की जैसे अवतारों के रूप में भगवान विष्णु, नायिकायें, अप्सरायें, योग–योगिनी आदि को सर्मिपत हैं। यह वाव मरू–गुर्जर शैली में निर्मित है जिसमें 7 मंजिल हैं।

चित्र सं.3– रानी की वाव, पाटन

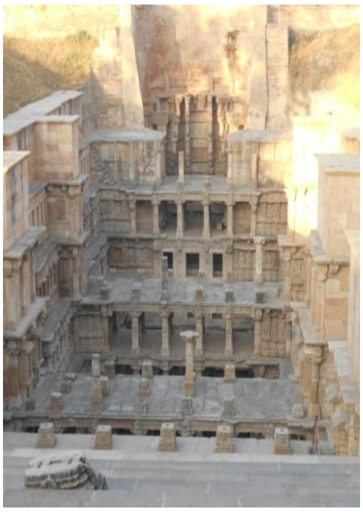

इसी सूची में दावाद स्थित अंकोल माता वाव है जो आकार में छोटा है। इसके उपरांत अहमदाबाद के असारवा गांव का माता भवानी वाव सोलंकी शासन काल के शासक करणदेव (1083–1093 ई.वी.) के द्वारा बनवाया गया। इस वाव का प्रकार नन्दा है अर्थात् इसमें एक ही प्रवेश द्वार है। इस वाव का विवरण Mirat-i-Ahmadi नामक ग्रंथ से प्राप्त होता है।

चित्र सं.4– रानी की वाव में दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियां

चित्र सं.5– माता भवानी वाव, असारवा, अहमदाबाद

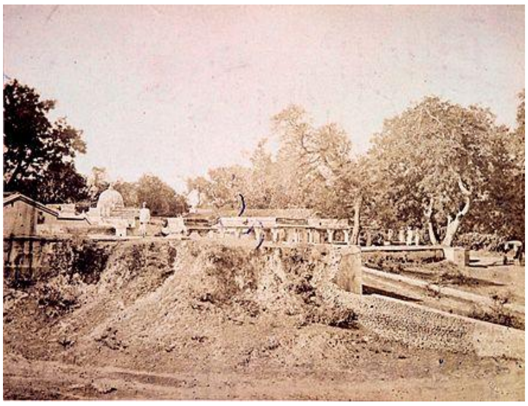

सोलंकी शासक सिद्धराज जयसिंह की मां मीनल देवी से संबंधित कई सीढ़ीदार वाव हैं। इन्होंने विरामग्राम में एक कृत्रिम झील मीयानाल सुर ; ढोलका में मीयानाल तालाब तथा वीरपुर में मीनल नी वाव का निर्माण 1095 ई. वी. में किया। कलेश्वरी नी वाव को सास–बहू नी वाव के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इतिहासानुसार इसका निर्माण सास तथा बहू द्वारा किया गया। यह भी सोलंकी काल में निर्मित अद्भुत वाव है।

चित्र सं.6– जेठा वाव, ईसानपुर, अहमदाबाद

भीमदेव द्वितीय के शासनकाल के दौरान राजनैतिक अशांति के फलस्वरूप निर्माण कार्य शिथिल पड़ गया। नवलखा मंदिर के समीप वीकिया तथा जेठा वाव व बारदा स्थित ज्ञान वाव भी भीमदेव द्वितीय के शासनकाल का प्रतिनिधित्व करता है।

उत्तरी गुजरात में 13वीं शती वघेला की शक्ति के उदय को दर्शाती है। इस दौरान विशालपाल तथा तेजपाल शानदार वास्तुशिल्प के निर्माण कार्य की गतिविधि का स्त्रोत थे। अनेक स्मारक जैसे मंदिर, अतिथि गृह, कुएँ, तालाब आदि इनके द्वारा बनवाये गये थे। वघेला के शासक विशालदेव द्वारा कई वाव प्रवेश द्वार सहित निर्मित किये गये। वाधवन स्थित माधा वाव का निर्माण नगर ब्राह्मिन माधा एवं केशव (वघेला शासनकाल के मंत्री) विक्रम संवत 1350 में किया गया।

चित्र सं.7– माधा वाव, वाधवन, गुजरात

14वीं शती में भी अनेक वावों का निर्माण किया गया जिसका प्रमुख उदाहरण मंगरोल स्थित 1319 ई.वी. में निर्मित सोधाली वाव है। सुदा वाव (महुवा) 1381 ई. ; हनी वाव (धंधुसार) 1389/1333 ई. तथा सिद्धनाथ महादेव वाव (ढोलका) ; सम्पा वाव (अहमदाबाद) 1328 ई. आदि गुजरात के तुगलक शासन के समय के हैं।

15वीं शताब्दी के अंतिम चरण में अहमदाबाद के दादा हरीर वाव का उल्लेख मिलता है जिसका निर्माण सुल्तान महमूद बेगाड़ा के द्वारा किया गया। यह वाव गुजरात में मुस्लिम काल के वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। यह 251 फुट लंबा, 16 फुट चौड़ा तथा 32 फुट गहरा है।

मुस्लिम शासन काल में वावों का निर्माण पूर्व काल के वावों की तुलना में अलग दृष्टिकोण तथा प्रायोजन से किया गया। सभी शुरूआती वावों में धार्मिक प्रभाव तथा पवित्रता को देखा गया परन्तु गुजरात के बाद के वावों में धार्मिकता ने अपना स्थान खो दिया। 15वीं शताब्दी में भी अनेक वावों की रचना की गई जिनमें वडोदरा स्थित नवलखी वाव, अदलज नी वाव (1499 ई. वी), नगबाबा वाव (1525 ई.वी.), जीवा माता वाव आदि प्रमुख हैं।

चित्र सं.8– अदलज नी वाव, अहमदाबाद

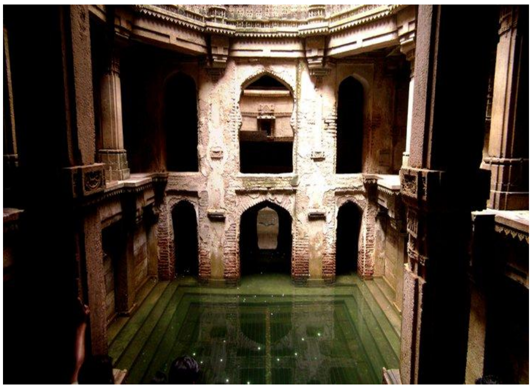

चित्र सं.9– वाकानेर पैलेस तथा वाव, वाकानेर, गुजरात

भारत में गुजरात राज्य के अतिरिक्त बावड़ियाँ लखनऊ, राजस्थान, दक्षिण भारत, नई दिल्ली आदि क्षेत्रों में भी पाई जाती हैं। राजस्थान निर्मित बावड़ियाँ गुजरात क्षेत्र में पाये जाने वाले वावों की तुलना में अलग संरचना की हैं। इनका समयकाल 8वीं से 11वीं शताब्दी का है जिनके प्रमुख उदाहरण हमें ओसियां (8वीं शताब्दी) ; चांदबाउरी, आभानेरी (8वीं शताब्दी उत्तरार्ध) ; भीनामल (8वीं शताब्दी) ; नाडोल, पीपल, हराथा (9वीं शताब्दी) ;

बसंतगढ़ (10वीं शती) ; सेवासी (11वीं शती) ; बूंदी (उत्तरमध्यकल) आदि से प्राप्त होते हैं।

चित्र सं.10– चांदबाउरी, राजस्थान

चित्र सं. 11– अग्रसेन की बाउली, गंधक की बाउली, राजौरी की बाउली, दिल्ली

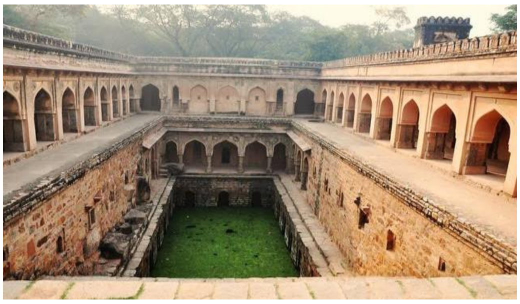

इसके अतिरिक्त गंधक की बावली (1210–1236 ई.), राजौरी की बाउली (1516 ई.वी.) आदि प्रमुख हैं। साथ ही कर्नाटक में भी हमें सीढ़ीदार कुएँ पाये जाते हैं जिनकी संरचना कुंड के समान है जिसका प्रमुख उदाहरण आइहोल स्थित हुच्चीमल्लीगुढ़ी मंदिर में सीढ़ीदार कुए के रूप में देखने को मिलता है। इसका समयकाल 7वीं शती का माना जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहे सकते हैं कि बावड़ियां प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का प्रमुख स्त्रोत रही हैं जिनमें उपलब्धता एवं प्राप्ति की दृष्टि से काफी विषमतायें मिलती हैं। ये वास्तुकृतियां किसी व्यक्तिगत अहं, प्रदर्शन या समृद्धि हेतु नहीं बनती थीं बल्कि जल से संबंधित ये इमारतें सार्वजनिक उपयोग हेतु बनाई जाती थीं जो 'सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाये' के उद्देश्य को पूर्ण करने में सक्षम रहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *www.gujarattourism.net*
2. *www.ahemdabadcity.com*
3. *www.mythicalindia.com*
4. *सोमपुरा, प्रभाशंकर ओ., 1975, भारतीय शिल्प संहिता, सौमेया पब्लिकेशन्स, प्रा. लि.,बम्बई।*
5. *Tod, James, 1971, Travels in Western India, Oriental Publishers, Delhi.*
6. *Jain-Neubauer,J.,1981, Stepwells of Gujarat in art- Historical Perspective, Abhinav Publications, New Delhi.*